International Training Program (ITP)

On-site Education of Practical Languages for Area Studies

Report in 2009

—Hindi, CSDS, India, 30 Sep. 2009-23 Mar. 2010—

Year of Enrollment: 2009
Graduate School of Asian and African Areas Studies
HAMAYA Mariko

On My Research Theme and Language Training

मेरी रीसार्छ का उद्देश्म यह है कि महिला साधुसन्त जिन्को साध्वी कहते हैन् जो उत्तर भारत के तीर्थ स्थनोन् मेन् रहती हैन् उन लोगोन् की जीवन समाज सन्स्क्रती के बारे मेन् एथ्नोग्रफ़ी लिखना है। ख़ासकर मेरी फ़ोकस् इस पर है की साध्वियोन् और स्थनीय लोगोन् यात्रियोन् के बीचे मेन् कैसे सेवा का अभ्यास किया जाता है और साध्वी कैसे माता बन जाती है।

इस रीसार्छ करने के लिये हिन्दी आना ज़रूरीहै इसलिये ITP के मध्यम से मैन् पिछले अक्तूबर से लगभग ६ महिनोन् के लिये भारत गई। शुरूमेन ३ महिने गहनता से हिन्दी सीखने के लिये वाराणसि जो भारत मेन् सबसे प्रसिद्ध तीर्थ है वहान् गई। और पिन्कू जी नामक हिन्दी अध्यापक के घर मेन् साथ मेन् रहते रोज़ रोज़ हिन्दी सीखी। वाराणसि मेन् हिन्दि के अलावा सन्गीत नाच योग आदि अलग अलग सन्स्क्रति सीख सकते हैन् इसलिये वहान् रहना तो मेरेलिये बहुत अच्छा अनुभव था।

उसके बाद हरिद्वार जहान् कम्भ मेला चल रहा था वहान् गई। लगभग ढा ई महिनोन् के लिये रही। और उस दौरान जो साध्वियोन् कुम्भ के लिये अलग अलग जगह से आई थीन् या हरिद्वार मेन् पहले से रहती हैन् उन लोगोन् के पास जाकर इन्तर्व्यू किया। एक साध्वीजो सतोपन्थ मेन् रहती हैन् उनके साथ एक महिने रहते इधर उधर गई और वे मेरी गुरूजी बन गई। एक साध्वी जो पहले मुसलमान् का आदमी से शादी करके मुसलमान बन गई लेकिन उस के पति के मरने के बाद साधु का कपडा पहनने लगी मैन् उनकी अच्छी सहली बनी। और एक साध्वीमाईवाला नामक आश्रम शुरू किया। यह आश्रम जैसे गरीब महिला अनाथ बच्छी और जो साध्वी अकेले रहती है उन लोगोन् के लिये रहने की व्यवस्था करता है। हम लोग बात् करते हैन् कि भबिष्य मेन् साथ साथ मिलकर आश्रम के लिये सेवा करेन्गे।

ऐसे इस रीसार्छ के दौरान कुछ साध्वियोन् से अच्छा सन्बन्ध बना सकी। और साथ ही इस के बारे मेन् पता चला कि साध्वियोन् कैसे

साधु बनने के बाद या सन्सार छोडने के बाद विकल्प सन्बन्ध ख़ासकर गुरूशिष्य सन्बन्ध बनाती हैन्।

<日本語要旨>

本研究の目的は、北インドの巡礼地で暮らす女性修行者「サードヴィー」の人生、社会、文化などについて、民族誌を書くことである。特に、サードヴィーや地域住民や巡礼者のあいだでどのようなセワー（奉仕）実践がされているか、そしてサードヴィーはどのように「マーター（母）」になるのか、という問題に焦点をあてる。

本研究には、ヒンディー語の習得が必須である。そのため、ITP で６ヶ月間現地へ渡航し、ヒンディー語を勉強した。最初の三ヶ月強は、ワーラーナシで、ヒンディー語の先生の家にホームステイする形で、ヒンディーの勉強に専念した。残りの約２ヵ月半は、クンブメーラーというサードゥたちの集まる祭りの開かれていたハリドワールというまちへいき、さまざまなサードヴィーのもとへいって聞き取りをする、あるいは一緒に生活するなどして、ヒンディーでのコミュニケーションの実践に力を入れた。こうして、ITP 派遣のあいだに、私は数人のサードヴィーとよい関係を築くことができたので、それは今後の研究をすすめるためにも役立つだろう。